ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 277-279
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

रसिक गोविन्द के काव्य में भाषा का स्वरूप

डॉ0 प्रियंका गुप्ता
एसोसिएट प्रोफेसर,एम.एच. पी जी कश्वलेज,मुरादाबाद (उ0प्र0), भारत

Received- 07.05.2019, Revised- 12.05.2019, Accepted - 17.05.2019 E-mail: -aaryvart@gmail.com

सारांश : *काव्य में भाषा के स्वरूप की महत्ता को समझने के तथा भाषा का स्वरूप कैसा होना चाहिए, इसके लिए हम पं. बलदेव उपाध्याय के निम्न कथन को देख सकते हैं– "कविता के द्वारा कवि अपने हृदय के भावों को दूसरों पर प्रकट करता है। यही उसका वास्तविक उद्देश्य है और इसलिए आवश्यक है कि कविता में न तो अप्रचलित शब्दों का प्रयोग हो और न क्लिष्ट शब्दों का, क्योंकि ऐसा करने से कवि अपने हृदय की बात दूसरों तक भली–भाँति जल्दी से जल्दी नहीं पहुँचा सकता। उस कविता से संसार को लाभ ही क्या है जिसे 'खुद समझें या खुदा समझें।' इसलिए कविता में सीधे–सादे, जल्द समझ में आने वाले, बहु–प्रचलित शब्दों का प्रयोग आवश्यक होता है। कविता केवल रोचक ही नहीं बनती, प्रत्युत श्रोताओं के हृदय को उसी प्रकार व्याप्त कर लेती है, जिस प्रकार सूखे काठ में लगी हुई, आग पूरे काठ को क्षण–भर में पकड़ लेती है।"*

कुंजीभूत शब्द– भाषा के स्वरूप, कविता, हृदय के भावों, वास्तविक उद्देश्य, अप्रचलित शब्दों, क्लिष्ट ।

एक ओर रसिक गोविन्द आचार्यत्व का निर्वहन करते दिख पड़ते हैं, तो अन्य ओर श्रृंगार आदि से युक्त सहृदय कवि की भूमिका निभाते हैं। साथ ही राधा–.ष्ण की भक्ति में डूबा हुआ एक भावुक भक्त भी उसमें विद्यमान रहता है। अपनी इन विभिन्न भूमिकाओं के कारण उनकी भाषा के स्वरूप में संदर्भ के अनुसार परिवर्तन भी होता जाता है।

रसिक गोविन्द के काव्य की प्रमुख भाषा ब्रज है। रसिक गोविन्द ने संस्त एवं भाषा के ग्रंथों का गंभीर अध्ययन किया था। उनमें शब्दों के मर्म को पहचानने की विलक्षण शक्ति थी।

ब्रज भाषा के अतिरिक्त भी कवि ने अन्य देशी भाषाओं का भी प्रयोग अपने काव्य में विभिन्न स्थानों पर किया है। यद्यपि ब्रज भाषा की तुलना में इनकी मात्रा कम है। इसका कारण यह है कि रसिक गोविन्द जैसे सहृदय कवि की अधिकांश रचनाएँ माधुर्य व सरस भावों से युक्त हैं, और ऐसी कोमलकांत रचनाओं के लिए सबसे उपर्युक्त भाषा 'ब्रज भाषा' ही हो सकती थी। यही कारण है कि प्रायः सभी रीतिकालीन कवियों की भाषा भी ब्रज भाषा ही है। तथापि रसिक गोविन्द ने प्रसंगानुसार अन्य भाषाओं का भी उपयोग किया है।

शब्द चयन एवं पद प्रयोग– साधना के क्षेत्र में परतत्त्व स्पर्श के कारण अनुभूति के आवेग में शब्दों को उन्होंने अत्यंत सरलता एवं सहजता से प्रयुक्त किया है। संस्कृत तत्सम एवं तद्भव शब्दों से उनकी कविता का सौंदर्य खिल उठा है। कहीं–कहीं अपभ्रंश तथा विदेशी भाषाओं के शब्द भी मिलते हैं।

संस्कृत के तत्सम शब्द– भारतवर्ष की अनेक भाषाओं का स्रोत संस्त भाषा ही है। संस्कारी साहित्यकारों द्वारा पारिभाषिक एवं व्यावहारिक तत्सम शब्दों का प्रयोग भाषा समृद्धि का द्योतक भी माना जाता है। संस्कृत के शब्दों का साहित्य, माधुर्य, गांभीर्य, प्रौढ़त्व एवं ऋजुत्व अतुलनीय है। संस्कृत तत्सम शब्दों के उचित प्रयोग से तद् तद् भाव एवं विचार को समपंक्ता एवं अर्थवत्ता प्राप्त होती है। अतः हिन्दी के अनेक श्रेष्ठ कवियों की भाँति रसिक गोविन्द ने भी संस्कृत शब्दावली को श्रद्धा एवं प्रेम से अपनाया है। उनके छंदों में संस्कृत तत्सम, शब्दों के प्रयोग दृष्टव्य हैं–

जै सर्वेश्वरि सर्वनिधि आनंद उदधि उदार।
जै परमेश्वरि सुंदरी अभिमतफलदातार।।
जय मुरलीधर कटि पीताम्बर अंग अंग वर वेश धरे।
श्याम सघन घन चित्रित चंदन अति अनूप सुभ शोभ धरे।।नयन विशाला उर वन माला नित आनंदित रूप हरी।।जय ब्रज वल्लभ दर्शन दुर्लभ गोपिन पूरण काम करी।।

उपरि निर्दिष्ट छंदों में सर्वेश्वर, सर्वनिधि, आनंद, उदथि, उदार, परमैश्वरि, अभिमतफलदातार, मुरलीधर, कटि, पीतांबर, अंग, वर वैश वरे, श्याम, सघन घन, चित्रित, चंदन, नयन, वनमाला, रूप, ब्रजवल्लभ, दर्शनदुर्लभ इत्यादि संस्कृत के तत्सम शब्द प्रयुक्त किये गये हैं। सहज रूप में प्रयुक्त इन शब्दों के अतिरिक्त उपालंभ, अनंग, मनोज, संकेत, नृपति, कल्याणरूपिणी, सकल, विकलता, परिहास, खेद, कामरस, दाहिम, कीर, कर्पूर, गरल, ग्रीवा कच इत्यादि शब्दों का यथोचित प्रयोग रसिक गोविन्द में किया है।

रसिक गोविन्द के काव्य में संस्त के सामासिक शब्द भी यत्रतत्र बिखरे हुए हैं। निम्नलिखित छंदों में ऐसे शब्दों का प्रयोग दर्शनीय है:–

रूप सुरार्चित हरहु त्रिविध ताप संताप।।
निश्चल श्यामा श्याम को श्रीवर–विपिन–विहार।।
जै परमेश्वरि सुंदरी अभिमत–फल–दातार।

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

लीला–रास–विलास–सुख कीने विविध विहार।।

इन छंदों में सुरार्चित, अभिमतफलदातार, श्रीवरविपिनविहार, लीलारासविलास सुख आदि सामासिक शब्दों का प्रयोग हुआ है। इनके अतिरिक्त कमलदल लोचन, अद्भुत पनिधान, अभयदानदायकमुजदंहा इत्यादि सामासिक शब्द भी मिलते हैं।

संस्कृत के अर्धतत्सम तथा तद्भव शब्द– उच्चारण की सरलता तथा लालित्य की दृष्टि से संस्कृत के शब्दों का रूपसंस्करण किया जाता है। यह रूप–परिवर्तन स्वरों एवं व्यंजनों के लोप, वृद्धि, विपर्यय आदि के द्वारा होता है। इनके कारण मूल भाषा के ये शब्द अपने विकसित रूप में लोक में प्रचलित हो जाते हैं। रसिक गोविन्द के निम्नलिखित छंदों में ऐसे शब्दा का प्रयोग इस प्रकार किया गया है–

जलझकोर लगि पवन बस झरत प्राग अरविंद।।
ऐसी जो तुव मृत्य का देहु मात मोहि सुख्ख।।
भई कछु न दुबिध्या देह में।।
सुकलांबर बांहन मकर धन्य घरत जे ध्यांन।।
अच्छै अब्दै अचल हरि लीलाहित अवतार।।

इन छंदों में प्रयुक्त बस, प्राग, मृत्यका, सुख्ख, दबध्या, सुकलांबर, बाहन, अच्छै एवं अब्दै ये शब्द क्रमशः वश, पराग, मृत्तिका, सुख, दुविधा, शुक्लांबर, वाहन, अक्षय एवं अव्दय इन संस्त शब्दों के अर्धतत्सम या तद्भव रूप हैं।

अपभ्रंश के शब्द भी इनकी रचना में प्राप्त होते हैं। यथा,

नैनन नेह मेह बरसावै।
केहरि लखि कटि रहत लजाई।।
जो सलेस भागोत में,
भारवा में नहि सोय।।

इन छंदों में प्रयुक्त नेह, केहरी, भारवा के अतिरिक्त अपभ्रंश के नाहर, नाह, जस इत्यादि शब्दों का प्रयोग भी रसिक गोविन्द की कविता में प्राप्त होता है।

ब्रजभाषा के अल्पप्रचलित एवं ठेठ शब्दों का प्रयोग भी रसिक गोविन्द के काव्य में .ष्टव्य है। यथा,

ढोलत ब्रज बाणरन गोंहन।।
तिय चलिबे की सौंज सवारी।।
तहाँ अचानक डगर मैं मिले नंद सुत मोई।।

अवधी के शब्दों को रसिक गोविन्द ने अपने काव्य में स्थान दिया है। यथा,

हिये रंगीले फागुन माँही।।
जर पूजन विधि मोहि बतावे।।

इन चरणों में अवधी के माँही एवं मोहि शब्दों का प्रयोग हुआ है। इनके अतिरिक्त बाही, इमि, किमि, उजियारा इत्यादि शब्दों का प्रयोग भी इनकी कविता में .ष्टिगत होता है। रसिक गोविन्द ने अपनी कविता में अरबी–फारसी जैसे विदेशी शब्दों का स्वीकार किया हुआ है। ये स्वयं फारसी के अच्छे ज्ञाता थे। निम्नलिखित इंद चरणों में इनका प्रयोग .ष्टव्य है:–

केसर होजन मोज बनाई।।
घार बचावन अदा सुहावन।।
तकिया बन्यौ मनोहर नीकौ।।
श्री रावल सिवर्सिह जी करता काम हमेस।।
कित तुर्रा गुररा करै।।
नायब बखशी फौज कौ।।

उपर्युक्त छंद चरणों में मौज, अदा, हौज, नायब, फौज, तुर्रा गुर्रा, बख्शी, तकिया, हमेश इत्यादि अरबी फारसी के शब्द प्रयुक्त हैं। इनके अतिरिक्त माफक, आवाज, नजर, बहार, बर जोर, सनम, सूरत, इजार, बदन, बाजी, जामा, रूमाल, रजाई, पार्यदाजी, लहंगा इत्यादि अनेक अरबी–फारसी के शब्द रसिक सुंदर के काव्य में स्थान–स्थान पर समुचित रूप से स्वीकृत है।

उर्दू मिश्रित खड़ी बोली– इस प्रकार की उर्दू मिश्रित खड़ी बोली का प्रयोग भी कवि ने किया है। इस प्रकार की छंदबद्ध काव्य को 'रेखता' कहा जाता है। यहाँ एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

"इन होलियों के दिन में लला इश्क न लगइये,
नाहक भरम धरैगा लोग नजरिबाज हैं।
झोली गुलाल भरी उड़ाते आते हौ लपटाते करते हौ
इस्तरावी यह क्या मिजाज है।
संदल कौं जाफरान कौं अकसर लगाते मुष सैं
लगि जायगा कलंक तौ फिरि क्या इलाज है।
गोबिंद रसिक सजन तुम जाहर जहूर ज्यांनी
घर जान दीजै मुज कौं गुरजन की लाज हैं।"

यहाँ इश्क, नाहक, नजरिबाज, इस्तराबी, मिजाज जाफरान, इलाज आदि उर्दू के शब्दों के साथ हिन्दी, ब्रज आदि के शब्दों का प्रयोग कर चमत्कार उपस्थित किया है।

पंजाबी– रसिक गोविन्द ने पंजाबी प्रभावित भाषा का प्रयोग भी किया है। उदाहरार्थ–

"रोलियां मुष्प लगांवदा लाल गुलाल, अबीर उड़ांवदा झोलियां
षोलियां गालियां तालियां दैंदा करैं, दागली विच्च बोलियां ठोलियां।
घोलियां कित्तीनी साडड़ी जिंद, उसी से लगी दिल प्रीति ककोलियां।
चोलियां रंग गुबिंद भिजांवदा, गांवदा रंग रंगीलियां होलियां।।

यहाँ रोलियां, लगांवदा, उड़ांवदा, झोलियां, गालियां, तालियां, दैंदा, दागली, विच्च बोलियां, ठोलियां घोलियां,

कित्तीनी, साडड़ी, जिंद, कलोलियां, चोलियां, गांवदा, रंगीलियां, होलियां पंजाबी शब्दों का प्रयोग स्पष्य रूप से दिखता है।

पूर्वी भाषा– रसिक गोविन्द ने पूर्वी प्रदेश की भाषा को भी अपने काव्य में स्थान दिया है। यथा,

"रंग भरि भरि भिजवइ मोरि अँगिया, दुइ कर लिहि सक न कपि चकरवा।
हम सन ठन गन करत डरत नहि, मुष सन लगवत अतर अगरवा।
अस कसकस वसियत सुनु ननदी, फगुन के दिन इहि गुकुल नगरवा।
मुहि तन तकत वकत पुनि मुसकत, रसिक गुबिंद–अभिराम लंगरवा।"

यहाँ भिजवइ, दुइ, लिहि, सक न, चकरवा, अगरवा, कसकस, सुनु, ननदी, इहि, नगरवा, वकत, मुसकत, लंगरवा जैसे पूर्वी प्रदेशों के शब्दों का प्रयोग किया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि रसिक गोविन्द के काव्यों में अभिव्यक्ति हेतु विभिन्न भाषाओं के शब्दों का विशाल भण्डार है, जिसका प्रयोग उन्होंने अनुकूल प्रसंग के अनुसार किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. संस्कृत आलोचना – पं. बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ 206.
2. रास रस माधुरी, सर्वेश्वर मासिक पत्रिका में प्रकाशित–रसिक गोविन्द, पृष्ठ 1.
3. रास रस माधुरी, सर्वेश्वर मासिक पत्रिका में प्रकाशित–रसिक गोविन्द, पृष्ठ 23.
4. गंगा भक्ति बिनोद, हस्तलिखित ग्रंथ, पुणे विश्वविद्यालय– रसिक गोविन्द, पृष्ठ 2.
5. रास रस माधुरी, सर्वेश्वर मासिक पत्रिका में प्रकाशित– रसिक गोविन्द, पृष्ठ 1.
6. रास रस माधुरी, सर्वेश्वर मासिक पत्रिका में प्रकाशित– रसिक गोविन्द, पृष्ठ 1.
7. रास रस माधुरी, सर्वेश्वर मासिक पत्रिका में प्रकाशित– रसिक गोविन्द, पृष्ठ 1.
8. गंगा भक्ति बिनोद, हस्तलिखित ग्रंथ, पुणे विश्वविद्यालय– रसिक गोविन्द, पृष्ठ 6.
9. गंगा भक्ति बिनोद, हस्तलिखित ग्रंथ, पुणे विश्वविद्यालय– रसिक गोविन्द, पृष्ठ 11.
10. गंगा भक्ति बिनोद, हस्तलिखित ग्रंथ, पुणे विश्वविद्यालय– रसिक गोविन्द, पृष्ठ 7.
11. गंगा भक्ति बिनोद, हस्तलिखित ग्रंथ, पुणे विश्वविद्यालय– रसिक गोविन्द, पृष्ठ 12.
12. सुरति बिनोद, हस्तलिखित ग्रंथ, पुणे विश्वविद्यालय– रसिक गोविन्द, पृष्ठ 11.
13. रास सर माधुरी, "सर्वेश्वर" मासिक पत्रिका में प्रकाशित– रसिक गोविन्द, पृष्ठ 24.
14. फाग बिनोद, हस्तलिखित ग्रंथ, पुणे विश्वविद्यालय– रसिक गोविन्द, पृष्ठ 12.
15. सुरति बिनोद, हस्तलिखित ग्रंथ, पुणे विश्वविद्यालय– रसिक गोविन्द, पृष्ठ 47.
16. रसिक बिनोद, हस्तलिखित ग्रंथ, पुणे विश्वविद्यालय– रसिक गोविन्द, पृष्ठ 5.
17. फाग बिनोद, हस्तलिखित ग्रंथ, पुणे विश्वविद्यालय– रसिक गोविन्द, पृष्ठ 3.
18. प्रेम बिनोद, हस्तलिखित ग्रंथ, पुणे विश्वविद्यालय– रसिक गोविन्द, पृष्ठ 21.
19. फाग बिनोद, हस्तलिखित ग्रंथ, पुणे विश्वविद्यालय– रसिक गोविन्द, पृष्ठ 24.
20. फाग बिनोद, हस्तलिखित ग्रंथ, पुणे विश्वविद्यालय– रसिक गोविन्द, पृष्ठ 24.
21. गहता घाटी के शिलालेख की चोपाई छंद–8.
22. गहताघाटी की बारादरीका शिलालेख छंद–1.
23. सुमन प्रकास, हस्तलिखित ग्रंथ, पुणे विश्वविद्यालय, गोविन्द रसिक, पृष्ठ 1.
24. गंगाभक्ति बिनोद, हस्तलिखित ग्रंथ, पुणे विश्वविद्यालय, गोविन्द रसिक, पृष्ठ 25.
26. गोविन्दानंदघन– रसिक गोविन्द, पृष्ठ 25.

*****